परिशिष्ट

डा. रामकुमार वर्मा से एक भेंट

वह दिन (६-१०-१९६३) स्मरण रखने का है । यों तो मैं ने अनेक साहित्यिक प्रतिमाओं से भेंट की और साहित्य संबंधी चर्चाओं में भी भाग लिया है परन्तु हिन्दी के प्रसिद्ध आलोचक, कवि, एकांकीकार डा. रामकुमार वर्मा जी से जो भेंट हुई वह अलग बात रही। हां, मैं तो यह मानती हूं कि जो जितना बड़ा होता है उतना ही नम्र तथा सहृदय होता है । विशेषतया कवि की संवेदना इस दिशा में अधिक विशिष्टता लिये रहती है । अपनी बहुमुखी प्रतिभा और सृजनात्मक कलापूर्ण शक्ति के ज्ञाता होने के उपरान्त मानव के मन में " अहं " का जागृत होना साधारण सी बात है । अहं का जागृत होना एक दृष्टिकोण से आवश्यक भी है । पर अपने अहं को पहचानने की क्षमता का रखना, जिस सीमा तक उस की जागृति की आवश्यकता है उस सीमा तक उस को रोके रखना साधारण व्यक्तित्व वाले मनुष्य के वश की बात नहीं । निश्चित सीमा तक " अहं " की जागृति आत्म-संतुष्टि की द्योतक है । मैं ने डा. रामकुमार वर्मा जी के समक्ष यही अनुभव किया है । यह नहीं कह सकेंगे कि वे इतने अबोध हैं कि वीर हनुमान की भांति अपनी शक्ति से अपरिचित हैं और यह बात भी नहीं कि अपनी शक्ति से परिचित परशुराम की भांति अहं से युक्त हैं । उन में अहं विद्यमान है पर आत्मसंतुष्टि के रूप में । इसी कारण से मुझे ऐसा लगा कि उन के ऐतिहासिक पात्रों के समष्टिगत संपूर्ण व्यक्तित्व अपनी पूर्ण शालीनता में डा. वर्मा के रूप में मेरे सामने हुए मूर्तिमान होकर खड़ा हुआ हो ।

जब उन्होंने एकांकी शिल्प संबंधी मेरे प्रश्नों का उत्तर दिया है तब उन के वक्तृत्व में उन के सब व्यक्तित्वों का समष्टिगत रूप मेरे सामने आया है । उन्होंने एक आचार्य की भांति विषय का स्पष्टीकरण सुबोध ढंग से किया है कवि की भांति कल्पना से युक्त वाणी में भावुक ढंग से मुझे समझाया है । आलोचक की भांति विवादग्रस्त प्रश्नों के आलोचनात्मक उत्तर दिये हैं । इन सब से मुझे वह रूप अधिक आकर्षक लगा है जब उन उन विषयों को समझाते समय एक अभिनेता की भांति उन्होंने अभिनय कर के दिखाया है । उन की वाणी में आवेश है, तीव्रता है और हैं सहानुभूति, आवश्यकतानुसार उन की कंठ-ध्वनि आरोह अवरोह की मात्राओं से युक्त होकर प्रभाव डालने में समर्थ है ।

उन की रचनाओं के पीछे उन का यह महान व्यक्तित्व छिपा रहता है। अत: उन की रचनाओं में भी वह प्रावोत्पेदक चुम्बक की आकर्षण शक्ति रहती है जिस से पाठक कौतूहल से प्रेरित होकर उन की ओर आकृष्ट होते हैं।

मैं नीचे उस प्रश्नोत्तरी को प्रस्तुत कर रही हूं।

१. एकांकी विधा को अब आप ने किस प्रेरणा से ग्रहण किया है ?
मेरी रुचि अभिनयात्मक काव्य (Dramatic poetry) लिखने में थी। नूरजहां, कुणाल के काव्य निर्माण से भी जब मेरा मन नहीं भरा तो मैं ने एकांकी विधा को ग्रहण किया है। एकांकीनाटक रचना से मुझे वह मानसिक संतुष्टि प्राप्त हुई जो अभिनयात्मक काव्य- कृजन से मिलती है।

२. " जीवन के अंदर " से आप ने अपनी एकांकी रचना के उपयुक्त जो वस्तु चयन किया है, उस चयन में क्या आप का अलग दृष्टिकोण रहा ?

मैं ने आप का आशय नहीं समझा।
मेरा आशय यह है कि आप किसी वाद को दृष्टि में रखकर वस्तु चयन करते हैं क्या ?

मैं अपनी रचनाओं में किसी वाद की प्रतिष्टा नहीं करता। प्राचीन काल में मानव में जो निश्चयात्मकता विद्यमान थी, जिस के कारण वह सशक्त बना था, वह इस काल में नष्ट हो गई। मानव स्वप्रेरित अथवा आत्मप्रेरित होकर कार्य क्षेत्र में आगे नहीं बढ़ रहा। मानव बिखर गया है। मैं उसे संपूर्ण अस्तित्व से (Clear cut of existence) युक्त बनने की प्रेरणा देना चाहता हूं। मानव जीवन को कल्याणकारी पथ में अग्रसर करना चाहता हूं। मेरी वस्तु चयन की दृष्टि भी इसी पर आधारित है।

३. यदि आप " चारुमित्रा " या "दस मिनट " या अन्य किसी एकांकी की रचना आज करते तो उसका वैसा ही रूप होता या बदल जाता ? मतलब, शिल्प-विन्यास में कोई अंतर नहीं पड़ता ?

संभव है, किसी घटना का चित्रण पिछले चित्रण की अपेक्षा अधिक परिमार्जित और विशिष्ट हो जाता है। किसी विशिष्ट क्षण के मनोविज्ञान में परिवर्तन होता है। जहां तक पात्रों की मौलिक चरित्र रेखाएं हैं, उन में कोई परिवर्तन होना संभव नहीं।

[illegible] पात्रों की स्थिति, संघर्ष आन्तरिक द्वन्द तो प्रधानता: वैसे ही [illegible] रहते । किन्तु प्रस्तुतीकरण मे कुछ अंतर अवश्य आता है । यह अंतर परिस्थिति को अधिक रागरंजित करने के लिए या अधिक उभारने के लिए अथवा अधिक प्रभावोत्पादक बनाने के लिए हो सकता है ।

४. आप के ऐतिहासिक एकांकी अन्य एकांकी नाटकों की अपेक्षा अधिक प्रौढ़ और गंभीर हैं । इस का क्या कारण है ?

ऐतिहासिक एकांकी नाटक में जो सांस्कृतिक या इतिहास संबन्धी पृष्टभूमि प्राप्त होती है, उस के परिवेश में कथावस्तु वैसे ही विभाजित हो जाती है जैसे फ्रेम में चित्र । ऐसा गंभीर आलोक मंडल तैयार हो जता है कि कथानक भाव प्रवणता से युक्त होने की क्षमता रखता है । सामाजिक एकांकी में कल्पना से ही सारे वातावरण की सृष्टि होती है । इसलिए कल्पना उतनी ओजस्विनी न हो पाती है जितनी कि इतिहास से आमोदित या आधारित [illegible] कथानक । ऐतिहासिक एकांकी की समस्त विचार धाराएं सत्य से अनुप्राणित हैं । यही कारण है कि इतिहास का वातावरण केवल कुछ पल के स्पर्शों से अधिक गंभिर हो जाता है ।

दूसरी बात यह होसक्ती है कि इतिहास के द्वारा जो प्रसिद्ध व्यक्ति है , उन के संबन्ध में जनता के मन में सत्य की स्वीकृति है । अत: ऐतिहासिक पात्रों का विवेचन होता है तो तत्संबन्धी प्रभाव अधिक स्वीकार्य होते है । सामाजिक एकांकी नाटकों की कल्पना मे तो समस्त पाठकों को प्रयत्न करना पड़ता है कि लेखक के दृष्टिकोण से अपना दृष्टिकोण मिला दे । इसी अंतर के कारण ऐतिहासिक एकांकी अन्य एकांकी नाटकों की अपेक्षा अधिक प्रौढ़ और गंभिर हैं ।

५. पाश्चात्य नाटककारों मेंआप को कौन पसंद हैंऔर क्यों ?

आस्कार वाइल्ड और इब्सन दोनों को बहुत पसंद हैं । इब्सन ने चरित्र की विचित्र और कुतूहलोत्पादक परिणतियां प्रस्तुत की । वाइल्ड में कथोपकथन का सौन्दर्य है और उन्होंने वस्तु स्थिति को साकार रूप में प्रस्तुत करने में कुशलता प्रदर्शित की है । इन दोनों को मैं पसंद करता हूं । यद्यपि इन से मैंने विशेष ग्रहण नहीं किया, फिर भी इन की नाटकीय कुशलता से परिचित होकर उस के अनुरूप सोचने और चरित्र निर्माण करने का प्रयत्न किया है।

६. आपका सर्वप्रिय एकांकी कौन-सा है ? ऐतिहासिक एकांकियों में उत्कृष्ट एकांकी किसे समझते हैं ?

(सस्मित) यह बताइये कि आप के हाथ की पांच उंगलियों में कौन-सी उंगली आप को पसंद है ?

मैं कभी हल्के एकांकी की रचना नहीं करता । पूर्ण संतुष्टि होने के उपरान्त ही एकांकी का निर्माण करता हूं और समस्त पूर्णताओं से आश्वस्त होने के बाद ही प्रकाशित करता हूं । अत: प्रत्येक एकांकी उद्देश्य से पूर्ण है । हां, हो सकता है, जैसे अनामिका से चंदन लगाते हैं वैसे मेरे भावों के अनुरूप कुछ एकांकी प्रिय हों । ऐसे में कुछ लिये जा सकते हैं ----

(अ) संवाद कौशल की दृष्टि से "नानकदत्त"

(ब) मनोवैज्ञानिक संघर्ष की दृष्टि से "औरंगज़ेब की आख़िरी रात"

(क) आदर्श प्रियता की दृष्टि से "तैमूर की हार"

(ख) नैतिक अभ्युत्थान की दृष्टि से "दीपदान"

(ग) चारित्रिक संघर्ष की दृष्टि से "चारुमित्रा"

वस्तुत: एकांकी के क्षेत्र में जो भावनाओं का परिवेश होता है, उसकी कथाएं, उस के संदर्भ भिन्न होते हैं । जिस अनुपात से किसी विशेष संदर्भ की पूर्ति होती है, उसी पर नाटक की लोक प्रियता अथवा प्रभाव आधारित है । ऐतिहासिक एकांकी के भिन्न भिन्न परिवेश हैं । उस की सफलता प्राप्त साहित्यिक सामग्री की मात्रा पर तथा उस का नाटक कला में कौशल पूर्ण प्रयोग पर निर्भर है । जहां यह पर्याप्त है और साथ ही साथ संतुलित रूप से मनोविज्ञान में प्रविष्ट हो वहां ऐतिहासिक संप्रेषणीयता रहती है । किसी उत्कर्ष विशिष्ट आदर्श को प्रस्तुत करती है ।

"कौमुदी महोत्सव" इस दृष्टिकोण से सर्व प्रिय एकांकी है । इस नाटक का सब से बड़ा कौशल यह है कि चारित्रिक परिधि खींचने का सफल प्रयत्न किया गया है । चारित्रिक अभिव्यक्ति ऐतिहासिक नाटक का प्राण है । प्रत्येक पात्र की कथाओं का निर्धारण पूर्ण परिवेश के साथ होना चाहिए । मुद्राराक्षस, द्विजेन्द्रलाल कृत चन्द्रगुप्त, तथा प्रसाद कृत चन्द्र गुप्त नाटकों में चन्द्रगुप्त के व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा न की जा कर तत्कालीन राजकीय विप्लवों में, सिकंदर और चाणक्य के संघर्षों में माध्यम के रूप में चन्द्रगुप्त का चित्रण हुआ । मेरी दृष्टि individual projection, व्यक्तित्व का प्रक्षेपण पर है ।

अपने अपने व्यक्तित्व लिए चन्द्रगुप्त और चाणक्य सामने प्रस्तुत होते हैं। ये दोनों अपने अपने क्षेत्र में महान हैं। ऐसा ज्ञात होता है कि ये दो ज्वालामुखी अपने अपने आवेगों में ऐसा विस्फोट कर रहे हैं जिस से उन की शक्ति प्रकट हो रही है। Isolation of personalities पर मेरा ध्यान रहा है। इस तरह " कौमुदी महोत्सव " ऐतिहासिक एकांकी नाटकों में मेरा प्रिय एकांकी है।

६. " नहीं का रहस्य " एकांकी का मुख्योद्देश्य क्या है ?

यह वस्तुत: किसी विशिष्ट व्यक्तित्व का परिस्थितियों के कारण उत्पन्न आत्मगोपन या आत्मनिरोध अथवा चरित्र विपर्यय का मनोरंजक अध्ययन है। अंग्रेजी में A brief study in psychological reverses कह सकते हैं।

८. आप कवि भी हैं, आलोचक भी हैं, इतिहासकार भी हैं और एकांकीकार भी। इन में कौन-सा रूप आप को अधिक प्रिय है ?

मुझे जितनी मानसिक विभूतियां प्राप्त हुईं उन सब का उपयोग करता हूं। जैसे मैं पिता का पुत्र हूं, बच्चों का पिता हूं, बहन का भाई हूं, बच्चों के सामने पुत्रत्व को लेकर नहीं जाता और पिता के सामने पितृत्व को लेकर नहीं जाता। वैसे ही उन उन पृथक क्षेत्रों में पूर्ण आत्मविश्वास के साथ काम करता हूं। हां, अन्य मेरे सहयोगी एकांकीकारों में इतने व्यक्तित्वों की सम्मिष्टि नहीं। अन्य व्यक्तित्वों ने मेरे नाटककार के व्यक्तित्व को बड़ी सहायता पहुंचाई। मैं परिस्थितियों का विश्लेषण करने में शोध विद्यार्थी हूं। नियोजन करने में समालोचक हूं। कार्य निश्चित करने में निबन्धकार हूं। संवादों की प्रभावोत्पादकता में कवि हूं तो जीवनगत द्वन्द्व को समुचित रूप से प्रस्तुत करने में मंचाधिकारी नाटककार हूं। इसी कारण से मेरे सभी नाटक अभिनेय हो गये हैं। हां, यह तो मैं नहीं कह सकता कि कौन-सा रूप कब उभर जाता ?
संभवत: ऐतिहासिक नाटकों में आलोचक की जिज्ञासा उभरती हो। तो रोमांचक नाटकों में काव्य प्रियता। उदाहरण के रूप में आप " वासवदत्ता " में कवि रूप को देखेंगे। " विक्रमादित्य " में Research Scholar (शोध विद्वान) का रूप और " दीपदान " में निबंधकार, " समुद्रगुप्त पराक्रमांक " में आलोचक का रूप पायेंगे। जहां तक द्वन्द्व की स्थिति है वहां मेरे नाटककार का कंठस्वर मुखरित होता है।

मैं अभिनेता हूं।। इसलिए प्रत्येक वस्तु मेरी दृष्टि में रहेगी। प्रत्येक पात्र की वस्तु स्थिति से परिचित हूं। अभिनय प्रियता ने भी रंगमंच की व्यवस्था करने में सहायता दी है। इस तरह नाटक के निर्माण में अनेक प्रवृत्तियाँ काम करती हैं। " लखनऊ की शाम " और " वासवदत्ता " में कविता की प्रधानता है।

९. आपका जीवन दर्शन क्या है ? आप के दर्शन के बनने में कौन-कौन प्रभाव काम करते रहे ?

यह जीवन एक पवित्र विभूति है। इस का उपयोग और इसका प्रभाव इस रूप में होना चाहिए कि जैसे सूर्य की विभूति। जन कल्याण के लिए, जगत कल्याण के लिए निश्चित रूप से नियोजित करना चाहिए। इसलिए मैं आशावादी हूं। सत्यं, शिवं और सुन्दरम् को सदा माननेवाला हूं। मैं वैष्णव आस्तिक परिवार में पोषित हुआ। भारतीय संस्कृति के प्रति मेरी अधिक आस्था है। जीवन का महत्व गतिशीलता में है, कर्मण्यता में है। अकर्मण्यता, निराशा, अवसाद मेरे लिए विष हैं। यदि मैं पापी हूं, निराशावादी हूं, विषादपूर्ण हूं तो सन्देश कैसे देता ? जीवन में विषम परिस्थितियाँ सब पर आती हैं। मेरे जीवन में भी आ घेरती हैं। जैसे तूफान में तृण झुकता तो अवश्य पर ऊपर पुनः उठता है। जीवन की विषम परिस्थितियों से उत्पन्न दुःख देता ही है। गिरने में मेरा विश्वास नहीं। गिरकर उठने में मैं विश्वास करता हूं। बचपन में मैं बड़ा पहलवान था। अखाड़े में कभी चित नहीं हुआ। कभी कभी बराबरी में कुश्ती छूट जाती थी। वही बाल वय मनोवृत्ति रही कि मैं किसी के सामने आज तक चित्त नहीं हुआ। भले ही लोग मुझ को विषम परिस्थितियों में डाल दें, मैं कभी हार नहीं मानता। अंकुर ऊपर ही उठता है। नीचे कभी नहीं जाता। वह विषम परिस्थिति से भी धरती से रस लेता है। कितनी ही विकट परिस्थितियाँ उत्पन्न होवें, कितनी ही विभीषिकाओं में मानव व्यस्त रहे पर वह मरता नहीं। उसकी अंतरात्मा जीवित है। मानवता का लक्ष्य गतिशीलता के साथ अग्रसर होने में है। विपत्ति से दबकर विवश होना मानवता का अपमान करना है। मैं मानवता का प्रतिनिधि हूं। कभी पराजय को स्वीकार नहीं करता। कीचड़ में पैदा हो कर कमल जल के ऊपर खिलता है। सुगन्धि की बिखेरता है। भ्रमर को रस दान करता है। " पद्मपत्र मिवाम्भसा " हमारा आदर्श रहा है। That is the symbol of our life. जैसे मैं बड़ा हुआ हूं, इस दर्शन के बनने में उन उन परिस्थितियों और प्रेरणाओं ने काम किया।

१०. आप के एकांकियों का वर्गीकरण किस आधार पर करना युक्तिसंगत है ? विषय वस्तु के दृष्टिकोण से ? या रचना-तिथि-क्रम के विचार से ?

यदि आप रचना तिथि क्रम के विचार से वर्गीकरण करें तो मेरी विकासोन्मुखता तथा परिपक्वता पर प्रकाश डाल सकते हैं। मेरा रचना काल १९३० से प्रारंभ हुआ। मैं आप को व स्थितियां (land-Marks) बता देता हूं।

(क) भावनाओं का द्वन्द्व --- पहली स्थिति

(ख) घटनाओं का मनोरंजन --------- दूसरी स्थिति (नहीं का रहस्य)

(ग) जीवन की विविध परिस्थितियों का आकलन -- तीसरी स्थिति

(घ) मनोविज्ञान की गहराइयों में प्रवेश (चारुमित्रा) (रेशमी टाई)

इस के बाद विस्तार हुआ । सन् १६३० से १६४३ यानी १३ वर्षों में मैं ने अपना निर्माण किया । वह मेरी निर्माणावस्था है। इस के बाद सब क्षेत्रों में नाट्य शिल्प रचना का विकार और विस्तार हुआ है । समाज, राजनीति, दर्शन, इतिहास, धर्म, राष्ट्रीयता इन सब क्षेत्रों में विस्तार हुआ । भारतीय संस्कृति तथा दर्शन का विद्यार्थी और उन पर आस्था रखनेवाला हूं । इसी कारण से ऐतिहासिक क्षेत्र में बहुत अधिक विस्तार हुआ । मेरे ३२ ऐतिहासिक एकांकी हैं । ऋतुराज, पांचजन्य, दीपदान, रजतरश्मि आदि में विस्तार को आप देख सकते हैं ।

सामाजिक एकांकियों के दो भाग हैं १ परिवार २. व्यक्ति इन के अतिरिक्त बड़े परिवेशवाले नाटक भी हैं जिस में व्यक्ति, परिवार समाज तीनों आ जाते हैं ।

११. वस्तु विन्यास और समाप्ति बिन्दु पर आप के कुछ एकांकी साम्य रखते हैं । विशेष रूप से ऐतिहासिक नाटक एक ही ढांचे में ढले मालूम पड़ते हैं । नवीनता की कमी का क्या कारण है ?

इस प्रश्न को दो दृष्टियों से देख सकते हैं। वे १. विषय निरूपण २. शिल्प.

अन्तर्निहित सांस्कृतिक चेतना सदैव ऊपर उभारना चाहती है । कथा के विविध संदर्भ होते हैं । पर हमारा ध्येय वही मानवता है । Every Roads lead to Rome. वही सांस्कृतिक चेतना है, वही निष्ठा है । संभवतः आप को इसी कारण से साम्य व एकरूपता मालूम पड़ रही हो०ह० हो ।

जैसे मैं ने अपनी एक भूमिका में लिखा है, मैं चरमसीमा के बाद कथा वस्तु को आगे नहीं बढ़ाता । चारुमित्रा मेरी कल्पित पात्र है । उस की संभावनाओं में मैं ने ऐसी कल्पना भर दी कि सम्राट अशोक भी उसकी जय बोलता है । अंत में ही मैं ने यह स्पष्ट नहीं किया कि वह जीवित है या मृत है । चरमसीमा के उपरान्त कथा वस्तु को आगे अग्रसर नहीं करता ।अतः आपको शिल्प संबंधी साम्य मालूम पड़ा होगा ।

१२. आप के कितने एकांकी प्रकाशित हैं ? नवीनतम कौन सा है ?

मेरे १०२ एकांकी प्रकाशित हैं। ६ अप्रकाशित है।
एक नवीन संग्रह मयूर पंख के नाम से शीघ्र ही प्रकाशित होनेवाला है।
जैसे कृष्ण के मस्तक पर मयूर पंख सुशोभित होता है वैसे ही आशा है,
मेरा मयूर पंख साहित्य देवता के सिर पर सुशोभित हो।

----o----

सहायक ग्रन्थ सूची

साहित्य दर्पण	विश्वनाथ
दश रूपक	धनंजय
हिन्दी नाटक उद्भव और विकास	डा. दशरथ ओझा
हिन्दी नाटक साहित्य का इतिहास	डा. सोमनाथ गुप्त.
हिन्दी नाटक सिद्धान्त और समीक्षा	रामगोपाल सिंह चौहान
हिन्दी नाट्य विमर्श	प्रो. गुलाबराय
हिन्दी एकांकी	डा. सत्येन्द्र
हिन्दी एकांकी और एकांकीकार	प्रो. रामचरण महेन्द्र
हिन्दी एकांकी उद्भव और विकास	डा. रामचरण महेन्द्र
नाटक की परख	डा. एस. पी. खत्री.
आधुनिक हिन्दी नाटक	डा. नगेन्द्र
एकांकी नाटक	प्रो. अमरनाथ गुप्त
एकांकी कला	प्रो. रामबचन सिंह भ्रमर
नाटककार अश्क	सं. कौशल्या अश्क
रेडियो नाटक	हरिश्चन्द्र खन्ना.
विचार दर्शन	डा. रामकुमार वर्मा
साहित्य के पृष्ठ	प्रो. गजानन शर्मा
साहित्य सुषमा	सं. { नन्ददुलारे वाजपेयी
हंस एकांकी नाटक अंक.	{ लक्ष्मीनारायण मिश्र.

— 0 —

The Sankkrit Drma — A.Bevidale Keith
The Technique of the Experimental One Act Plays Sydney Box
The construction of one Act play Percival Wilde
chief faults in writing one Act plays Walter prichand Eaton
The Indian Theatre – Chandra Bhan Gupta
The Indian Theatre – R.K. Yajnik
Radio Theatre — Valeielgud

डा. रामकुमार वर्मा जी
के एकांकी संग्रहों
की भूमिकाएं.

1. पृथ्वीराज की आँखें
2. रेशमी टाई.
3. चारुमित्रा.
4. विभूति.
5. [illegible] सप्त किरण.
6. रजत रश्मि.
7. ऋतुराज.
8. दीपदान
9. रिमझिम
10. कौमुदी महोत्सव
11. ध्रुवतारिका
12. शिवाजी
13. कामकन्दला.
14. इन्द्रधनुष
15. चार ऐतिहासिक एकांकी.

---- ooooo----